मन्सा सेवा - 56

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **सेवाधारी अर्थात् हर समय अपने श्रेष्ठ दृष्टि से, वृत्ति से, कृति से सेवा करने वाले। जिसको भी श्रेष्ठ दृष्टि से देखते हो तो श्रेष्ठ दृष्टि भी सेवा करती है। तो निरन्तर सेवाधारी हैं। ब्राह्मण आत्मा सेवा के बिना रह नहीं सकती। जैसे यह शरीर है ना तो श्वास के बिना नहीं रह सकता तो ब्राह्मण जीवन का श्वास है सेवा।**

➳ _ ➳ **जैसे श्वास न चलने पर मूछित हो जाते हैं ऐसे अगर ब्राह्मण आत्मा सेवा में बिज़ी नहीं तो मूछित हो जाती है।** ऐसे पक्के सेवाधारी हो ना। तो जितना स्नेही हैं, उतना सहयोगी, उतना ही सेवाधारी हैं। सेवा का चांस तो बहुत है ना कि कभी किसको मिलता है, किसको नहीं मिलता?

➳ _ ➳ **वाणी से सेवा का चांस नहीं मिलता लेकिन मन्सा से सेवा का चांस तो हर समय है ही। सबसे पॉवरफुल और सबसे बड़े से बड़ी सेवा मन्सा सेवा है।** वाणी की सेवा सहज है या मन्सा सेवा सहज है? **मन्सा सेवा के लिये पहले अपने को पॉवरफुल बनाओ। वाणी की सेवा तो स्थिति नीचे-ऊपर होते हुए भी कर लेंगे।** भाषण करके आ जायेंगे। कोई कोर्स करने वाला आयेगा तो भी कोर्स करा देंगे।

➳ _ ➳ **लेकिन मन्सा सेवा ऐसे नहीं हो सकती। अगर मन्सा थोड़ा भी कमज़ोर है तो मन्सा सेवा नहीं हो सकती। वाणी की कर सकते हो।** ऐसे करना नहीं है लेकिन चलता है। **तो अब मन्सा, वाचा, कर्मणा सब प्रकार की सेवा करो तब फुल माक्र्स ले सकेंगे। निरन्तर सेवाधारी बनी क्योंकि जितनी सेवा करते ही उतना प्रत्यक्षफल मिलता ही है। तो सेवाधारी अर्थात् प्रत्यक्षफल खाने वाले।(18/11/1993)**

➢ द्रष्टि

➳_ ➳ यदि कोई कमझोर आत्मा हो,

→ और वो किसी ऐसी आत्मा की आँखों में निरंतर देखे

■ जिसमे नेगटिव एनर्जी है, तो वह एनर्जी ट्रान्सफर हो जाती है

▶ **EYE ARE THE WINDOWS TO THE SOUL**

▶ **TRANSFER OF THE ENERGY THROUGH EYE**

➳_ ➳ यह सारी सृष्टि उर्जा का समुद्र है

→ और आंखे यह माध्यम है

■ जिससे **उर्जा प्रवाहित** हो सकती है

➳_ ➳ इसी तरह इस संसार में महान आत्माए हुई है

→ उन्हें भी अपने गुरु से **SPRITUAL ENERGY TRANSFER** हुई है

■ **द्रष्टि के माध्यम से ही ट्रान्सफर की गई है**

- इसी रीती से परमात्म प्रेम
- ईश्वरीय शक्तिया भी ट्रान्सफर की जा सकती है
- केवल और केवल आँखों से ही
- **इसीलिए यज्ञ में दृष्टि का इतना महत्व है**

➳_ ➳ द्रष्टि से वो सब कुछ दिया जा सकता है, जो आत्मा में है

➳_ ➳ द्रष्टि से वो सब कुछ लीया भी जा सकता है, जो आत्मा में है

→ **देना और लेना दोनों द्रष्टि से किया जा सकता है**

➢➢ सेवा

➳_ ➳ **ब्राह्मण जीवन का श्वास सेवा है**

→ जैसे श्वास न चलने पर मुर्छित हो जाते है

- ऐसे ब्राह्मण सेवा में बिजी नही तो मुर्छित हो जाती है
- ऐसे पक्के सेवाधारी बनना है
- **निरंतर बिजी रहेंगे तो, सहज मायाजीत बन जायेंगे**

➢➢ बिजी रहने के 10 फायदे

➳_ ➳ बिजी रहेंगे तो **EASY** रहेंगे

➳_ ➳ बिजी रहेंगे तो **अलबेलापन नहीं** आयेगा

➳_ ➳ बिजी रहेंगे तो **टाइम वेस्ट नहीं** होगा

➳_ ➳ बिजी रहेंगे तो **व्यर्थ नहीं** चलेगा

➳_ ➳ बिजी रहेंगे तो **POSITIVE ENERGY GENERATE** होगी

➳_ ➳ बिजी रहेंगे तो **जो काम लिया है, वह पूरा हो** जायेगा

➳_ ➳ बिजी रहेंगे तो हम **BRAIN PRODUCTIVE** रहेगा

➳_ ➳ बिजी रहेंगे तो हमे बिजी देख **दुसरे भी बिजी** रहेंगे

➳_ ➳ बिजी रहेंगे तो कुछ **ACHIEVEMENT किया इसकी ख़ुशी** रहेगी

➳_ ➳ बिजी रहेंगे तो **बुध्धि एक्टिव** रहेगी

➢➢ पुरुषार्थ के मुख्य बिंदु

➳_ ➳ मन्सा सेवा हर कोई नहीं कर सकता है

→ **जिनका मन शक्तिशाली हो, वही मन्सा सेवा कर सकता है**

- यदि मन कमजोर हो तो यह सेवा नहीं हो सकती है

➳_ ➳ जितनी सेवा करते हो,

→ उतना ही प्रत्यक्ष फल मिलता है

- **सेवाधारी अर्थात प्रत्यक्ष फल खाने वाले**

➳_ ➳ द्रष्टि को श्रेष्ठ, पावरफुल, शक्तिशाली बनाना है

→ ब्राह्मणों की **आँखों की रोशनी** है, **पवित्र दृष्टि**

- द्रष्टि को पावन बनाना है
- द्रष्टि में जागरण होना चाहिये
  - अगर तुम जगे, तो तुम ऑरों को जगा सकेंगे
  - और संसार में रौशनी कर सकोगे
  - द्रष्टि से सेवा करने का अभ्यास करना है

➳_ ➳ स्वयं को दिनभर बिजी रखना है

→ **POWER OF FOCUS** सदा स्वयं को बिजी रखने पर होना छाहिये

➳_ ➳ अपने आपको शक्तिशाली बनाना है

→ कहा? कौनसी बात में मैं कमजोर हु?

- यह स्वयं को चेक करना है
  - और चेंज करना है

➳_ ➳ **अंतिम समय में केवल यही सेवा श्रेष्ठ रह जायेगी**

→ **संकल्प और द्रष्टि की सेवा**